बंगलौर में 6 अगस्त 2002 को हुई मीटिंग का विवरण

परम पूज्य श्री महाराज ने 6 अगस्त 2002 को प्रातः 9 बजे स्वयं सेवकों की एक मीटिंग बुलाई थी। लगभग 20 से 22 साधक इसमें उपस्थित हुए।

श्री महाराज जी ने 'श्री रामशरणम्' एवं उसके नियम एवं जिन मूल्यों के लिये यह संस्था है, के बार में अपने विचार व्यक्त करते हुए मीटिंग का शुभारम्भ किया। श्री महाराज जी ने सदस्यों को, जीवन में व्यक्तिगत पद एवं प्रतिष्ठा का ध्यान किये बिना, एक टीम की तरह कार्य करने का उपदेश दिया। उन्होंने परमपूज्य श्री स्वामी जी महाराज द्वारा स्थापित नियमों एवं दिशा निर्देशों के अनुसार कार्य करने की प्रार्थना की। यदि कोई इन नियमों के अनुसार नहीं चलता तो श्री महाराज जी ने फरमाया कि वे पहले व्यक्ति होंगे, जो ऐसे व्यक्ति या व्यक्तियों से नाता तोड़ लेंगे। उन्होंने जोर देकर कहा कि वे सन्तों की तरह, एक ही स्थान पर रुकेंगे एवं भोजन करेंगे।

श्री महाराज ने सुझाव दिया कि जब भी कोई अमृतवाणी सत्संग में भाग लेता है उसके पीछे केवल सत्संग का ही भाव होना चाहिये। उन्होंने कहा कि अब तो अमृतवाणी सत्संग, जन्म दिवस, शादी की वर्षगांठ एवं उठाले इत्यादि पर होने लग गये हैं। आप इन सब अवसरों पर वहां जाने के लिये स्वतंत्र हैं लेकिन इसके बाद जो खाने की पार्टी होती है, उसमें भाग न लें। अगर हम ऐसा करते हैं तो सत्संग की पवित्रता, उसका सार एवं उसके मायने ही खो जाते हैं। श्री महाराज जी ने कहा कि आप मेज़बान को विनम्रता से समझा सकते हैं, " हमारा इसमें आपका निरादर करने का भाव नहीं है और हम किसी दूसरे समय पर कुछ अवश्य ग्रहण कर लेंगे।।" श्री महाराज जी ने सुझाव दिया कि हम किसी भी जगह एक मण्डली की तरह न जायें। उन्होंने यह भी कहा कि किसी भी तरह की भेंट(फूल भी) नहीं चढ़ानी चाहिये। गुरु पूर्णिमा जैसे विशेष दिनों पर भी प्रसाद वितरण नहीं करना चाहिये।

यदि आप संस्था का विस्तार चाहते हैं, श्री महाराज जी ने जोर देकर कहा कि नियम एवं दिशा निर्देश पालन करने के लिये हैं, न कि तोड़ने के लिये। कोई भी साधक उनके पांव न छूए जैसी कि दक्षिणी भारत में प्रथा है। उन्होंने कहा कि स्वामी जी महाराज ने किसी को भी

अपने पांव छूने नहीं दिये।

श्री महाराज जी ने बलपूर्वक कहा कि हमें किसी और संस्था अथवा समूह के साथ नहीं जुड़ना चाहिये। यदि हम ऐसा करेंगे तो हम अपनी पहचान ही खो देंगे।

एक सदस्य ने कहा कि लोग उसके कार्य करने के ढंग को पसन्द नहीं करते चाहे वह अत्यन्त ईमानदारी से इस तरह का प्रयास करता है जिसके उत्तर में श्री महाराज ने कहा,"आप अपने तरीके से काम क्यों करते हैं ? सब की रज़ामन्दी से काम कीजिये।" श्री महाराज जी ने सुझाव दिया कि आप 10-12 साधकों का एक ग्रुप बना सकते हैं जो स्वयं निस्वार्थ भाव से कार्य करने की इच्छा रखते हैं। इस ग्रुप में सभी बराबर हों, कोई नेता न हो। जो भी निर्णय लिये जायें वे सामूहिक हों। श्री महाराज जी ने कहा कि संस्था का कोई भी कार्य करने के लिये किसी पर भी कोई दबाव न डालें। हर कोई अपनी स्वतंत्र इच्छा से कार्य करे। इसमें कोई अपेक्षा या आशा नहीं रखनी चाहिये। "अपेक्षा किसी से नही रखनी है" क्योंकि हम कौन होते हैं किसी से किसी भी तरह की अपेक्षा रखने वाले। सब में एकता होनी चाहिये। किसी से ईर्ष्या एवं वैर भाव नहीं होना चाहिये। हमें दूसरों की खुशियां एवं गम बांटने चाहिये। किसी के दुर्भाग्य या दुःख से हमें खुश नही होना चाहिये। उन्होंने कहा, "मैं सुख नहीं दे सकता तो मुझे दुःख भी नही देना चाहिये। गुण – ईर्ष्या का विषय नही बनना चाहिये। अवगुण किसी का दिखाई दे तो प्रार्थना कीजिये कि हे परमात्मा ! यह अवगुण मेरे अन्दर न आये।"

श्री महाराज जी ने कहा कि यदि वृद्धि चाहिये तो अपने आप को सुधारें, दूसरों के लिये उदाहरण बनें।

एक सदस्य ने शिकायत की कि उसके स्थान पर अमृतवाणी सत्संग में बहुत कम लोग आते हैं। श्री महाराज जी ने उत्तर दिया कि अगर एक व्यक्ति भी वहां हाज़िर है तो सत्संग चलना ही चाहिये और अगर आवश्यकता हो तो कैसेट चला लेनी चाहिये। कम हाज़िरी के प्रसंग में श्री महाराज जी ने पूछा कि सत्संग में आपको वृद्धि चाहिये या अपनी प्रसिद्धि ? श्री महाराज जी ने कहा कि वृद्धि के लिये आप सब अपने आप को सुधारो। जिससे लोग आप के स्वभाव से आकर्षित हों, ऐसी उदाहरण प्रस्तुत करो। नौकर बन कर काम कीजिये क्योंकि करने और करवाने वाला तो ईश्वर ही है।

एक अन्य सदस्य ने सुझाव दिया कि "श्री रामशरणम्" दिल्ली,

की एवं अन्य स्थानों की घटनाओं एवं कार्य कलापों की सूचना के लिये एक समाचार पत्रिका होनी चाहिये। उत्तर में श्री महाराज जी ने कहा कि इसमें व्यवहारिक कठिनाइयां हैं, इस कारण ऐसा सम्भव नहीं है। हमारे पास ऐसा करने के लिये आधारिक संरचना नहीं है। श्री महाराज जी ने सुझाव दिया कि जो सदस्य साधना सत्संगों एवं अन्य कार्यक्रमों में जाते हैं, उन्हें अपने स्थानों पर लौट कर, दूसरे साधकों को अपने अनुभवों का विवरण बताना चाहिये।

अन्त में श्री महाराज जी ने कहा कि हमें दिल्ली से प्राप्त होने वाले ग्रन्थों, माला एवं अन्य वस्तुओं का हिसाब रखना चाहिये। केवल झाबुआ, राजस्थान एवं बंगलौर के साधक नाम दीक्षा के समय दी जाने वाली मालाओं के पैसे दिल्ली न भेजें। शेष मालायें या तो दिल्ली वापिस भेज दी जायें या यदि आवश्यकता हो तो वहीं रख ली जायें और बिकने पर उनके पैसे दिल्ली भेज दिये जायें।

श्री महाराज जी ने दान(Donation) मांगने के लिये मना किया। सदस्यगण भी अगर दान दें तो उसकी रसीद जारी की जायें। आय एवं व्यय को पूरा रिकार्ड रखा जाना चाहिये। कोई व्यक्ति भी पैसे के व्यय का ब्यौरा मांगने के लिये स्वतंत्र है।

हम श्री रामशरणम् के सदस्य श्री महाराज जी के प्रति अपना सच्चा आभार प्रकट करते हैं कि उन्होंने अपना अनमोल समय देकर हमें पालन करने हेतु दिशा निर्देश एवं अमूल्य सुझाव दिये।

हम सभी अपनी पूरी सामर्थ्य से आपकी आकांक्षाओं के अनुरुप आचरण करने का वचन देते हैं।

हम सब की आपको चरण वन्दना एवं जय जय राम।

'श्री रामशरणम्' बंगलौर के साधकगण